अनेक रामत बीजी हती अति घणी, सुपने अग्राह ठेले संसार।
उघड़ी आंख दिन उगते एणे छले, जागतां जनम रुडा खोया आवार।। २ ।।

परमधाम में तो बहुत से खेल थे। न ग्रहण करने योग्य संसार में आपने हमें धक्का दे दिया। आपकी पहचान से होश में आने पर पता लगा कि इस माया ने हमारे सदा के जागृत सुखों को हमसे छुड़ा दिया है।

सनमुख तमसूं विरह रस तम तणो, कां न कीधां जाली बाली अंगार।
त्राहि त्राहि ए वातों थासे घेर साथमां, सेहेसूं केम दाग जे लाग्या आकार।। ३ ।।

हम आपके सामने परमधाम में बैठे हैं, फिर भी आपके वियोग में यहां संसार में रो रहे हैं। हे धनी! वहां पर ही क्यों नहीं हमको अग्नि में जलाकर अंगार कर दिया। हे धनी! अब हमें बचाओ-बचाओ की पुकार करती हूं। नहीं तो जो दाग हमारे गुनाहों का लगा है उसे सुन्दरसाथ के बीच घर में कैसे सहन करूंगी।

विरह थी विछोडी दुख दीधां विसमां, अहनिस निस्वासा अंग उठे कटकार।
दुख भंजन सहु विध पिउ जी समरथ, कहे महामती सुख देंण सिणगार।। ४ ।।

हे धनी! आपने हमको अपने से अलग कर विरह का कठोर दुःख दिया। जिससे हमारे अंग में रात दिन हाय-हाय की ठण्डी सांसें निकलती हैं और अंग के टुकड़े-टुकड़े करती हैं। महामतिजी कहते हैं कि हे मेरे धनी! आप दुःख मिटाने में सब तरह से समर्थ हैं। इसलिए अब मेरे दुःख मिटाकर अंगना को स्वीकार कर लो जिससे मैं सिनगार कर आपका सुख ले सकूं।

।। प्रकरण ।। ३९ ।। चौपाई ।। ४५२ ।।

हांरे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारड़े, विमुख विप्रीत कमर कसी हथियार।
स्वाद चढ्या स्वाम द्रोही संग्रामें, विकट बंका कीधा अमें आसाधार।। १ ।।

हे मेरे धनी! इन विचारों से हमारे अंग-अंग में आग जल रही है कि मैं अपने धनी से विमुख क्यों हो गई? आपके विरुद्ध लड़ने के लिए कमर क्यों कस ली? अपने धनी से युद्ध और विद्रोह करने की चाहना क्यों आ गई? निश्चित ही हमने आपके साथ भयंकर युद्ध किया है, हमने कोई बहुत उल्टा काम किया है।

कुकरम कसाब जुध कई कराविया, पलीत अबलीस अम मांहें बेसार।
जागतां दिन कई देखतां अमने छेतरया, खरा ने खराब ए खलक खुआर।। २ ।।

हे धनी! आपने हमारे अन्दर नीच अबलीस (शैतान) को बिठाकर कसाइयों जैसे खोटे कर्म माया में करवाए हैं। आपकी पहचान हो जाने पर भी इसने हमें कई बार ठगा। यह अबलीस (शैतान) ऐसा है कि भले आदमी को भी दुनियां में जलील करता है।

ओलखी तमने अमें जुध कीधां तमसूं, मन चित बुध मोह ग्रही अहंकार।
ए विमुख वातों मोटे मेले वंचासे, मलसे जुथ जहां बारे हजार।। ३ ।।

हे धनी! मैंने आपकी पहचान कर लेने के बाद भी मन, चित्त, बुद्धि, मोह और अहंकार में लिप्त होने से आप से युद्ध किया। इन उलटी बातों की चर्चा परमधाम के बारह हजार सुन्दरसाथ के मेले में होगी।

कहे महामती हूं गांऊं मोहोरे थई, पण विमुख विधो वीती सहु माहें नर नार।
धाम माहें धणी अमें ऊंचूं केम जोईसूं, पोहोंचसे पवाड़ा परआतम मोंझार।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसी उलटी चाल सभी ब्रह्मसृष्टियों ने चली है। मैं उनकी मुखिया बनकर कह रही हूं कि परमधाम में, हे धनी! हम आपके सामने आंख मिलाकर कैसे देखेंगे? क्योंकि तब हमारी यहां की करनी की हकीकत परमधाम में जाहेर हो जाएगी।

।। प्रकरण ।। ४० ।। चौपाई ।। ४५६ ।।

Nijanand App